33

नासरत में ठुकराया जाना

(13:53-58)

अवस्था परिवर्तन का यह पद्य एक नये भाग का आरम्भ करता है और 12:46-50 का अगला भाग होने के कारण, अध्याय 13 के दृष्टांतों के कोष्ठक को बन्द करने का काम भी करता है। दोनों पद्यों में यीशु के सांसारिक परिवार के साथ-साथ लोगों के उसके न समझने और ठुकराने को दिखाया गया है।

''चकित हुए'' (13:53-56)

[53]जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहां से चला गया। [54]और अपने नगर में आकर उनके आराधनालय में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा कि वे चकित होकर कहने लगे, ''इसको यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले? [55]क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं? [56]और क्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? फिर इसको यह सब कहां से मिला?''

आयत 53. जब यीशु ... कह चुका वाक्यांश सिखाने वाले भागों का अन्त करते हुए मत्ती कई अवस्था परिवर्तनों का संकेत देता है (7:28, 29; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1)। अपने **दृष्टांत** खत्म कर लेने के बाद प्रभु **वहां से चला गया;** यानी वह कफ़रनहूम से निकल गया।

आयत 54. यीशु **अपने नगर** गलील के नासरत **में आया** (2:23 पर टिप्पणियां देखें)। यह स्पष्टतया अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ के बाद से उस का पहली बार अपने नगर में आना नहीं था। लूका 4:16-30 जंगल में परीक्षाओं के थोड़ी देर बाद और यीशु के कफ़रनहूम में रहना आरम्भ करने से पहले उसके आने का संकेत देता है। मत्ती और मरकुस दोनों में हम पढ़ते हैं कि यीशु अपनी सेवकाई में बाद में नासरत में गया (मरकुस 6:1-6)।

''अपनी रीति के अनुसार'' (लूका 4:16), यीशु **उनके आराधनालय** में गया और **उन्हें उपदेश देने लगा**। मरकुस ने लिखा है कि ये घटनाएं सब्त के दिन घटीं (मरकुस 6:2)। मत्ती में यह पद्य आराधनालय में उस की शिक्षाओं के सम्बन्ध में सुसमाचार के विवरणों में अन्तिम हवाला है। नासरत में उसके नगर के लोग यीशु की शिक्षा पर **चकित होकर** पूछने लगे, ''**इसको यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले**?'' वे उसे लगभग जन्म से ही जानते थे (देखें 2:19-23)। नासरत से जाने से पहले वह न तो घुमक्कड़ प्रचारक था और न ही आश्चर्यकर्म करने वाला; परन्तु अब वह दोनों था।

आयत 55. लोग यीशु को **बढ़ई के बेटे** के रूप में जानते थे। अपने सांसारिक पिता के

पद चिह्नों पर चलकर वह स्वयं भी बढ़ई का काम करता था (मरकुस 6:3)। किसी यहूदी बेटे के लिए अपने पिता का व्यवसाय सीखना एक प्रथा थी (देखें फिलिप्पियों 2:22)। यहूदी कहावत थी कि ''जिसने अपने बेटे को कोई काम नहीं सिखाया, उस ने उसे चोरी करना सिखा दिया।''[1] यूनानी शब्द *tektōn* की परम्परागत रूप में व्याख्या बढ़ई के रूप में की गई है। यीशु को आम तौर पर अपने पिता की बढ़ई की दुकान में बड़ा होते, शायद घर का फर्नीचर या खेती का सामान बनाते दिखाया गया है। परन्तु *tektōn* शब्द का अर्थ सामान्य अर्थ में ''पत्थर का राज मिस्त्री'' या ''मिस्त्री'' भी हो सकता है।[2] बाइबल के आधुनिक विद्वानों द्वारा बाद की व्याख्या अधिक स्वीकार्य लगती है। यह हो सकता है कि अपने काम के लिए यूसुफ और यीशु एक से दूसरी जगह जाते हों, क्योंकि नासरत कैसरिया और तिब्रियास जैसे बड़े नगरों में जाने वाले मुख्य मार्गों के निकट था।[3] इसके अलावा सिफोरिस नासरत से कुछ ही मील उत्तर की ओर था और इसे यीशु के बचपन और जवानी के दौरान हेरोदेस अन्तिपास के द्वारा फिर से बनाया जा रहा था। यूसुफ और यीशु निर्माण कार्य के लिए वहां लगातार जाते होंगे।[4]

लोगों ने **मरियम** को यीशु की **माता** और **याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा** को **उसके भाइयों** के रूप में भी पहचाना (12:46 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 56. उन्होंने पूछा, ''**और क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच में नहीं रहतीं**?'' उनके प्रश्न से संकेत मिलता है कि यीशु की कम से कम दो बहने थीं, और ''विशेषण शब्द सब'' सम्भवतया सुझाव देता है कि और भी थीं। इन स्त्रियों का केवल उल्लेख इस आयत में और मरकुस 6:3 में है। पर उनके नाम नहीं दिए गए हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह प्रश्न दो और विचारों का सुझाव देता है। पहला तो यह कि यीशु की बहनें ''हमारे बीच'' होने का अर्थ है कि वे नासरत में ही ब्याही गई थीं और वहीं रहती होंगी। दूसरा, मरियम और भाई अब वहां नहीं रहते थे। शायद वे यीशु के साथ (सबसे बड़ा बेटा) उसके वहां बस जाने पर, उसी के साथ चले गए थे। उस का सांसारिक पिता यूसुफ जिसका नाम इस वचन में नहीं है, सम्भवतया पहले ही मर चुका था।

लोगों ने यह भी पूछा, ''**फिर इसको यह सब कहां से मिला**?'' वे यीशु के उस पहलू को देखकर, जिसका उन्हें पता नहीं था, हैरान थे।

''ठोकर खाई'' (13:57)

[57]इस प्रकार उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उनसे कहा, ''भविष्यवक्ता का अपने देश और अपने घर को छोड़, और कहीं निरादर नहीं होता।''

आयत 57. क्योंकि नासरी लोग यीशु को अच्छी तरह जानते थे, इस कारण **उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई**। नासरत के लोगों द्वारा यह विश्वास करना कठिन था कि परमेश्वर उनके बीच में से किसी नबी को खड़ा कर सकता है (देखें यूहन्ना 1:46)। उस की शिक्षाओं ने उनके कई विश्वासों को चुनौती दी (लूका 4:23-27)। (''ठोकर खाई,'' के लिए 11:6 पर टिप्पणियां देखें।) भीड़ द्वारा यीशु को ठुकराए जाने के कारण उसके मुंह से यह प्रसिद्ध बात निकली **''भविष्यवक्ता का अपने देश और अपने घर को छोड़, और कहीं निरादर नहीं होता।''**

अविश्वास (13:58)

[58]और उस ने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत से सामर्थ के काम नहीं किए।

आयत 58. उनके अविश्वास के परिणामस्वरूप यीशु ने **वहां बहुत से सामर्थ के काम नहीं किए**। मरकुस के अनुसार, ''वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े से बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया'' (मरकुस 6:5)। क्या मत्ती की बात लोगों के विश्वास की कमी के कारण यीशु की ओर से आश्चर्यकर्म करने की नाकामी का संकेत है? शायद नहीं। वचन केवल इतना संकेत देता है क्योंकि लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया इस कारण कुछ ही लोग आश्चर्यकर्मों के लिए उसके पास आए। जिन्होंने उस पर विश्वास किया और उसके पास आए उन्हें चंगाई मिल गई। बात यीशु की सामर्थ की नहीं थी, बल्कि उसे और उस की शिक्षाओं को स्वीकार करने से इनकार करने की लोगों की ढीठाई थी।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

क्या हम मसीह के कारण ठोकर खाते हैं? (13:53-58)

लोगों को मसीह से ठोकर लगी थी। उसके अपने नगर के लोगों को उससे ठोकर लगी थी (13:57; मरकुस 6:3; लूका 4:28, 29; देखें यूहन्ना 1:46)। आज के लोगों को क्यों ठोकर लगती है?

1. *मसीह का ध्यान भौतिक से बढ़कर आत्मिक की ओर था।* उसे शरीर से बढ़कर आत्मा की चिन्ता थी। उसे शारीरिक देह की चिन्ता थी पर उस ने इसे सही परिप्रेक्ष्य में रखा। हम सबसे महत्वपूर्ण बात को कहां रखते हैं? हमारे समाज को भौतिकवाद का नशा चढ़ा हुआ है। टैलीविज़न जैसे मीडिया के संसाधन हमारे बच्चों को आत्म-इनकार, निस्वार्थपन और आत्मबलिदान के बजाय स्वार्थी और अपने ऊपर तरस खाने वाले बनना सिखाते हैं। जीवन की सचमुच में आवश्यक बातों के बारे में वे क्या सीखते हैं?

2. *मसीह ने जीवन की साधारण बातों को ऊंचा किया।* वह अपने समय के यहूदी धर्म के दिखावे और परिस्थिति से नाराज थे। उस ने सादे तरीके से सादा जीवन जिया। वह सामर्थी लोगों को समझाने के लिए कमज़ोर और मूर्खता की बातों का इस्तेमाल करता है (1 कुरिन्थियों 1:27)। पौलुस को डर था कि कहीं कोई ''उस सादगी से जो मसीह में है'' भटक न जाएं (2 कुरिन्थियों 11:3; NKJV)। क्या हम आराधना के सरल कार्यों या उद्धार की सरल योजना से अपमानित होते हैं?

3. *मसीह नें अपने समय के सबसे पसन्द किए जाने वाले कुछ विश्वासों और परम्पराओं का विरोध किया।* यदि वह यहूदियों के धार्मिक अगुओं से सहमत हो जाता, तो वह उसे अपने साथ मिला लेते। इसके विपरीत उस ने उनके पापपूर्ण कार्यों और धार्मिक गलतियों की निन्दा की। उस ने उन पर कपटी होने का आरोप लगाया और उन्हें धार्मिकता अपनाने की शिक्षा दी (6:2, 5, 16; 15:3-11)। आज जब कुछ लोगों को पता चलता है कि मसीह ने धार्मिक जगत की कुछ प्रसिद्ध शिक्षाओं को नहीं सिखाया तो उन्हें ठोकर लगती है। उद्धार के नीमित परमेश्वर

की सामर्थ केवल मसीह का सुसमाचार है (रोमियों 1:16)।

हमें जीवन की भौतिक बातों से बढ़कर आत्मिक बातों की चिन्ता होनी आवश्यक है। यदि मसीह हर दिन आकर हमारे साथ चले तो क्या हो? क्या जो कुछ वह हमें बताए हमें उससे ठोकर लगेगी?

टिप्पणियां

[1]टोसेफ्टा *क़िद्दुशिन* 1.11. [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. वं संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 995. [3]देखें डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन्न, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबल्डे एंड कं., 1971), 173. [4]रिचर्ड बेटे, *जीज़स एंड द फोरगॉटन सिटी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991), 70-82.